एलिज़ाबेथ का स्कूल

स्टेफनी

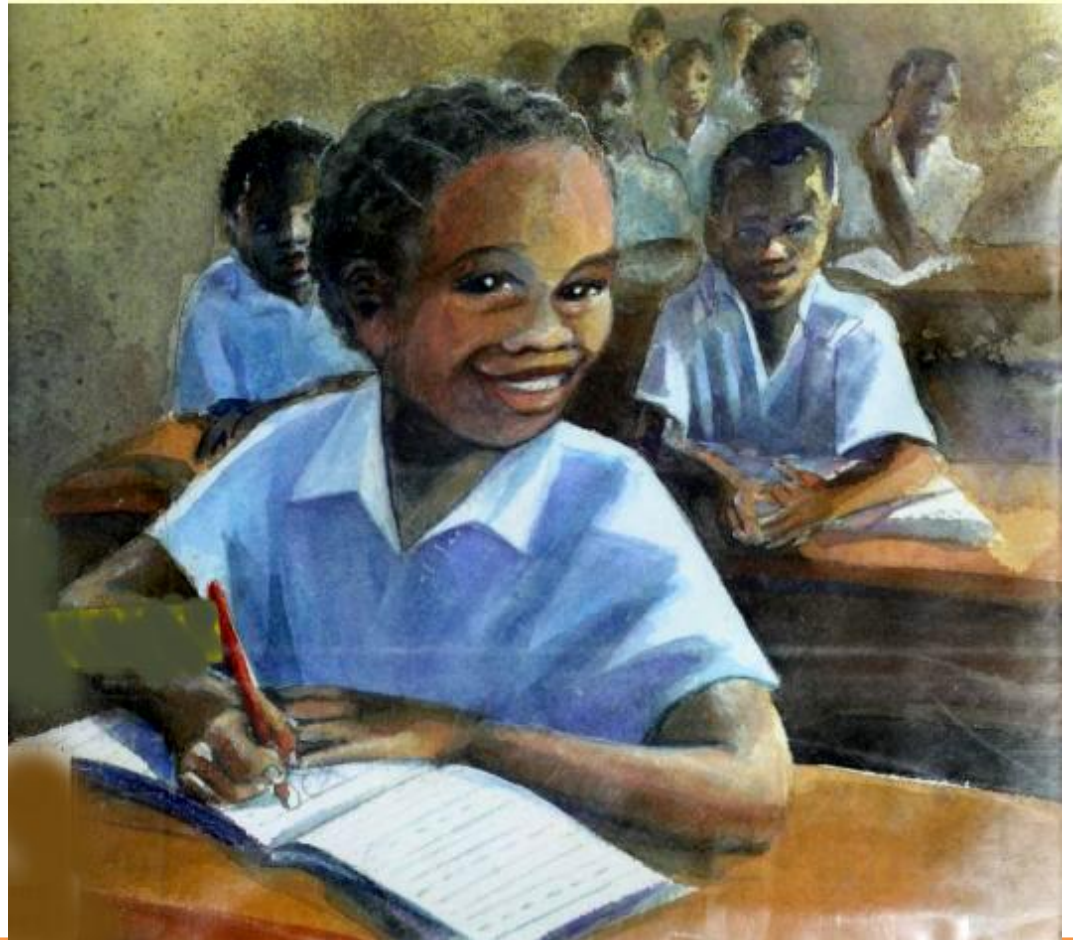

एलिज़ाबेथ का स्कूल

स्टेफनी

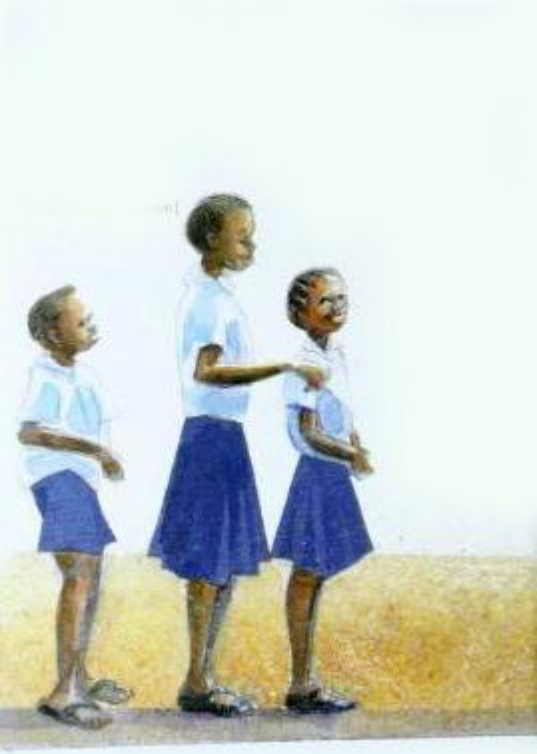

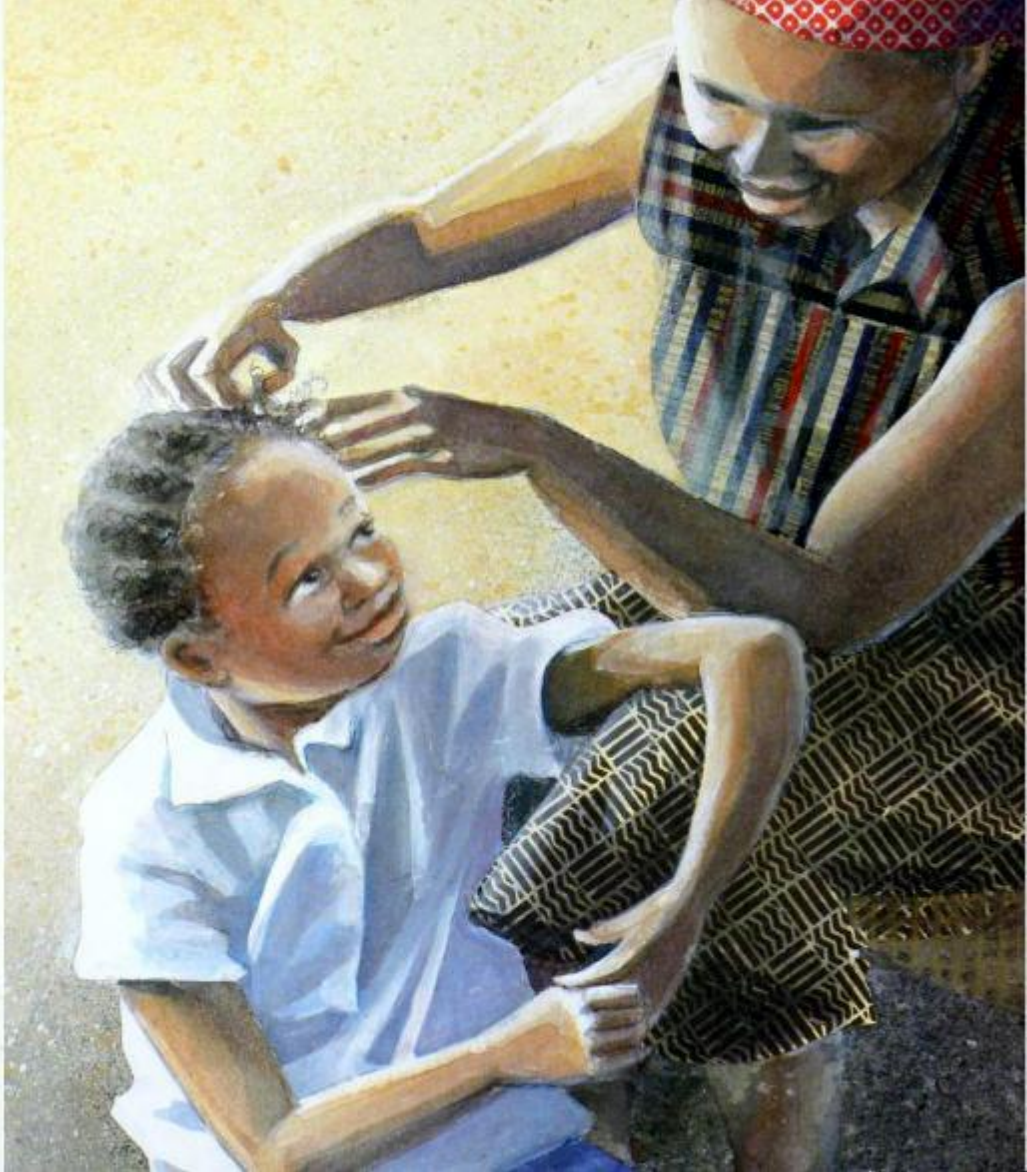

आज एलिज़ाबेथ के स्कूल का पहला दिन था. जब मामा ने उसके बालों को चोटी बनाने के लिए सहलाया तब उसने स्थिर बैठने की पूरी कोशिश की. लेकिन वो इतनी उत्तेजित थी इसलिए वो चुप नहीं बैठ पाई.

मामा ने जब उसके बाल बनाने ख़त्म किये तब एलिजाबेथ झट से नीचे कूदी. वो कुछ देर अपनी नई स्कूल यूनिफार्म में इधर-उधर घूमती रही.

वो अपने चमकदार नए जूतों की चिकनी सतह को छूने के लिए नीचे झुकी.
अब उसे नंगे पैर नहीं घूमना पड़ेगा! एलिजाबेथ मुस्कुराई.
स्कूल निश्चित रूप से ज़रूर कोई विशेष स्थान होगा.

क्योंकि स्कूल जाने में अभी कुछ समय बाकी था, इसलिए एलिज़ाबेथ अपनी बिल्ली मोशी से खेलना चाहती थी. एलिज़ाबेथ ने मोशी का पीछा करने के लिए एक डोर पकड़ी. ऐसा वो हर दिन करती थी. लेकिन आज मोशी का खेलने का मन नहीं था.

अंत में स्कूल जाने का समय हुआ. फिर एलिजाबेथ ने मोशी से अलविदा कहा. उसने अपनी गुड़िया ईवा और अपनी छोटी बहन, फ्लोरा को भी गले लगाया. उसने अपने छोटे भाई ओबेदी से अलविदा कहा. ओबेदी ने उसे एक पुच्ची दी.

फिर मामा ने एलिज़ाबेथ के सिर को थपथपाया और उसे और उसकी बड़ी बहन पेन्डो से अच्छा व्यवहार करने को कहा.
फिर वे दरवाजे के बाहर निकले.

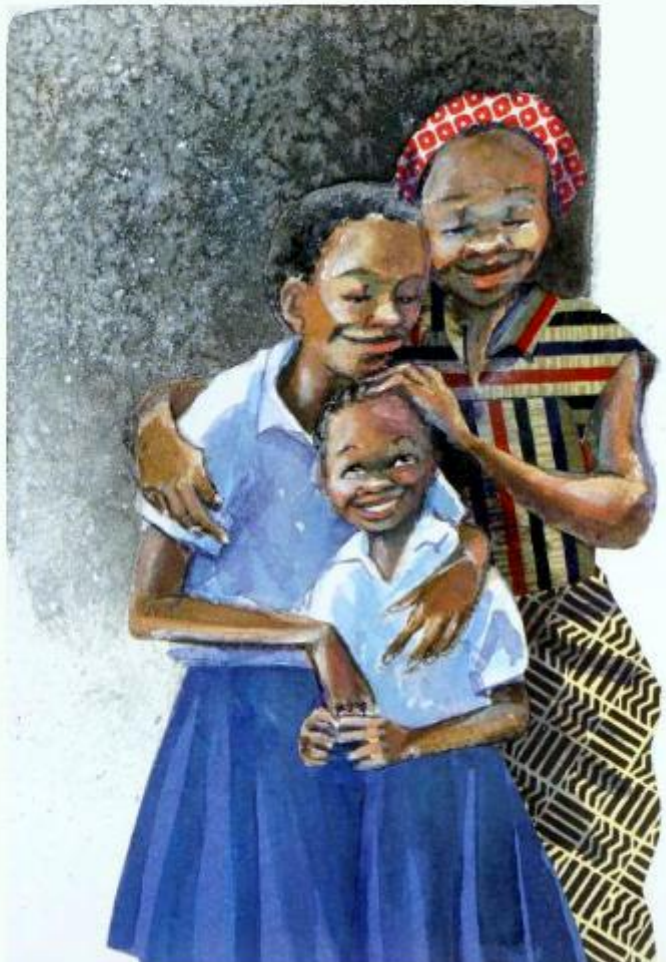

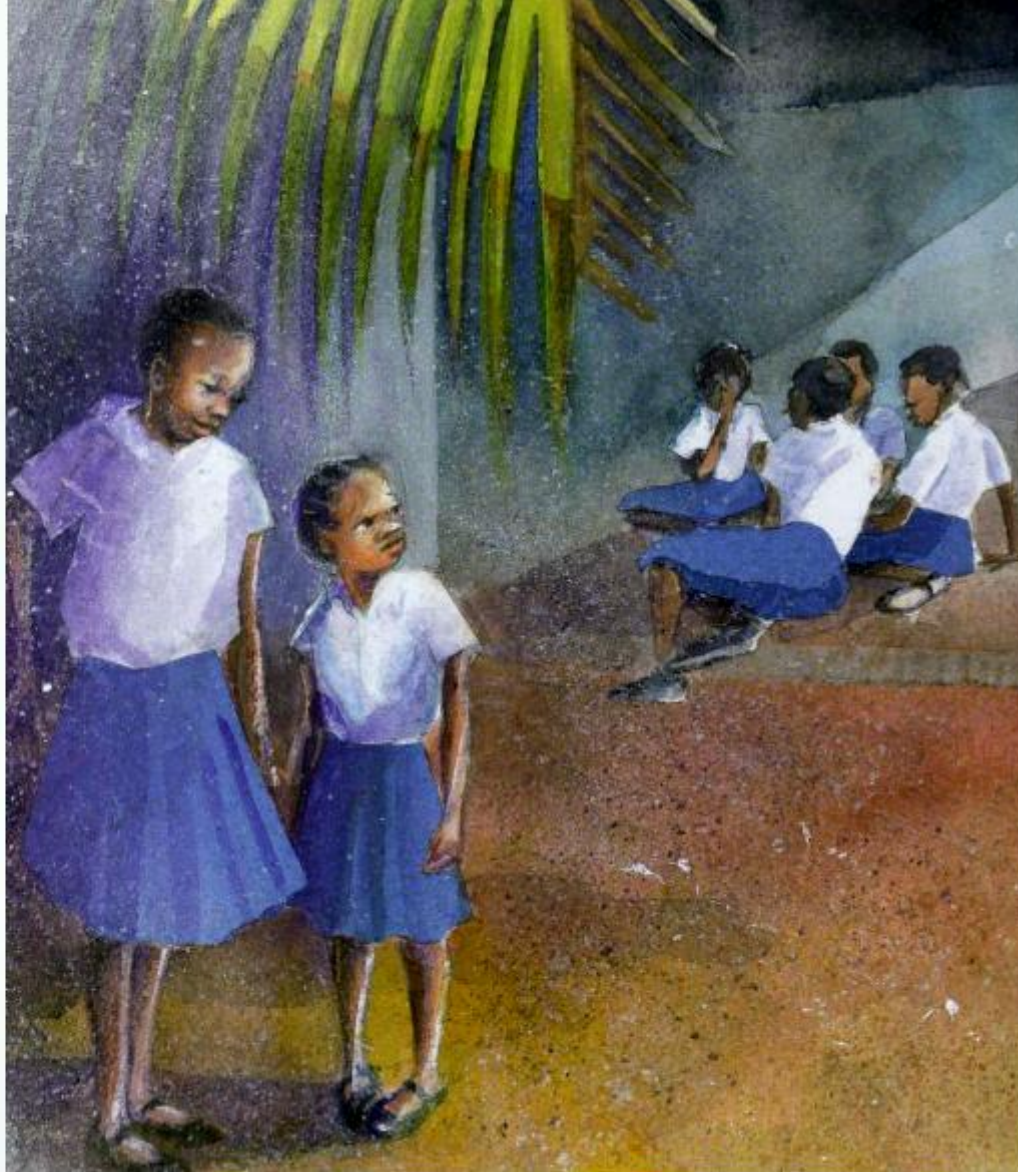

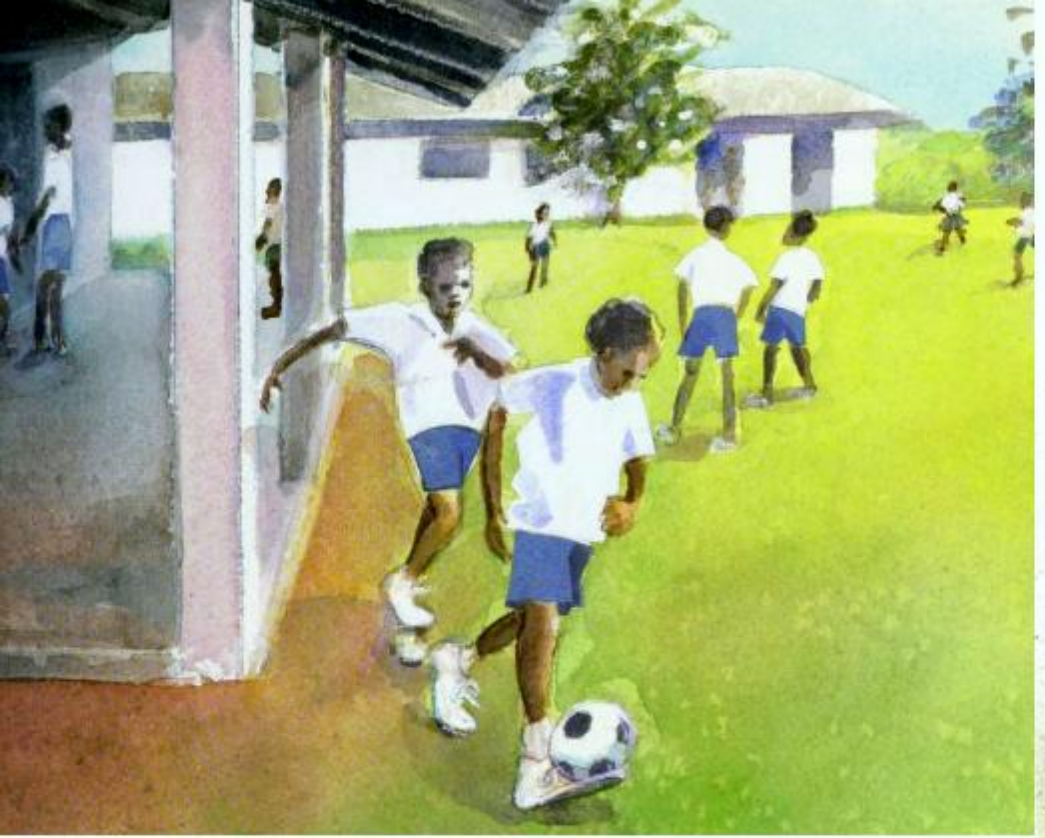

पहले तो एलिज़ाबेथ बहुत तेज़ी से चली, लेकिन स्कूल के नजदीक आते ही उसकी चाल धीमी हो गई. पेन्डो ने एलिज़ाबेथ का हाथ पकड़ा और वो उसे स्कूल के मैदान में ले गई. वहां पर हर जगह हँसते-चिल्लाते और गाते हुए लड़के-लड़कियाँ थे. इतना शोर सुनकर एलिज़ाबेथ शर्माने लगी. उसने पीछे मुड़कर देखा कि वे किस रास्ते से स्कूल आई थी. अब वो घर वापिस जाना चाहती थी.

लेकिन तब एलिजाबेथ की दोस्त रहली ने उसका हाथ पकड़ा और वो उसे जमीन पर घुटनों के बल बैठी हुई कुछ लड़कियों के पास ले गई. वे लड़कियां छोटे पत्थरों के साथ “मचौरा” खेल रही थीं. उन्हें देख एलिजाबेथ मुस्कुराई. उसे यह पत्थरों का खेल बहुत पसंद था!

एलिज़ाबेथ ने देखा कि रहली ने मिट्टी में एक छोटा सा गड्ढा बनाकर उसे पत्थरों से भरा. फिर रहली ने एक पत्थर हवा में फेंका और उसी हाथ से गड्ढे में से एक पत्थर निकाला. फिर उसी हाथ से, जमीन पर टकराने से पहले उसने हवा वाले पत्थर को पकड़ा. अगली बार उसने दो पत्थर निकाले, और फिर तीन.
एलिज़ाबेथ ने भी एक गड्ढा खोदना शुरू किया. पर तभी टीचर ने घंटी बजाई.

एलिज़ाबेथ दूसरों के साथ क्लास में अंदर घुसी. वो सामने की एक बेंच पर बैठ गई. टीचर ने उन्हें वो सारे काम बताए जो उन्हें आज करने थे. लेकिन एलिज़ाबेथ को उन्हें समझने में कुछ परेशानी हुई. वह सोचती रही कि क्या घर में फ्लोरा उसके साथ खेलना चाहती थी या फिर मामा को चावल साफ करने मे उसकी मदद की जरूरत थी.

अन्य बच्चों ने उन अक्षरों की नक़ल की जिसे टीचर ने ब्लैकबोर्ड पर लिखा था. एलिज़ाबेथ ने भी उनकी नक़ल की. लेकिन वो लगातार घर के बारे में सोचती रही - क्या ओबेदी उसके साथ टहलने जाना चाहता था? क्या ईवा अपनी बहन की गैरमौजूदगी में खुद को अकेला महसूस कर रही थी? पता नहीं घर के लोग एलिजाबेथ को कितना याद कर रहे थे. लेकिन एलिजाबेथ निश्चित रूप से उन्हें बहुत याद कर रही थी!

पाठ ख़त्म होने के बाद सभी बच्चे बाहर चले गए. कुछ बड़े लड़कों ने ड्रम बजाना शुरू किया, और लड़कियों ने उस धुन पर नृत्य किया. एलिजाबेथ को वो नाच नहीं आता था, लेकिन एक बड़ी उम्र की लड़की ने उसका हाथ पकड़ा और उसे दिखाया कि उसे क्या करना है. एलिज़ाबेथ को वो नाच बहुत पसंद आया. वो लगातार वो नाच करना चाहती थी. लेकिन फिर घंटी बजी और उसे दुबारा अंदर जाना पड़ा.

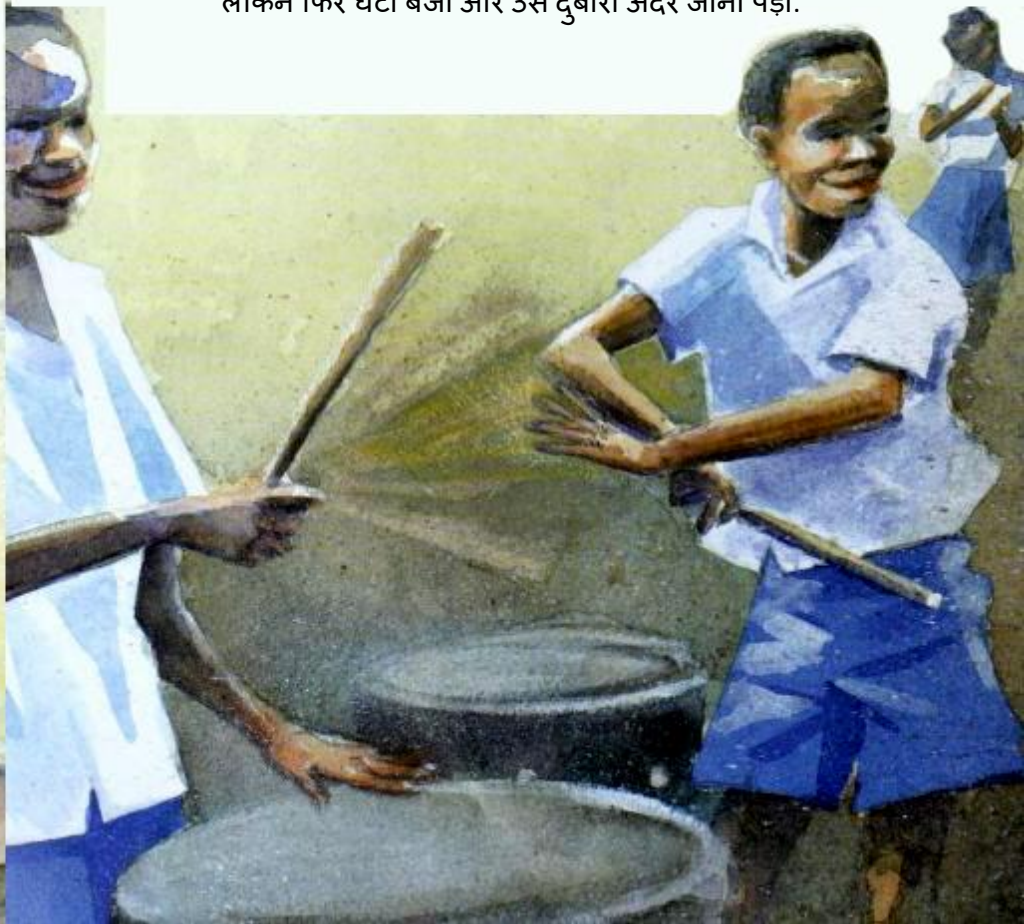

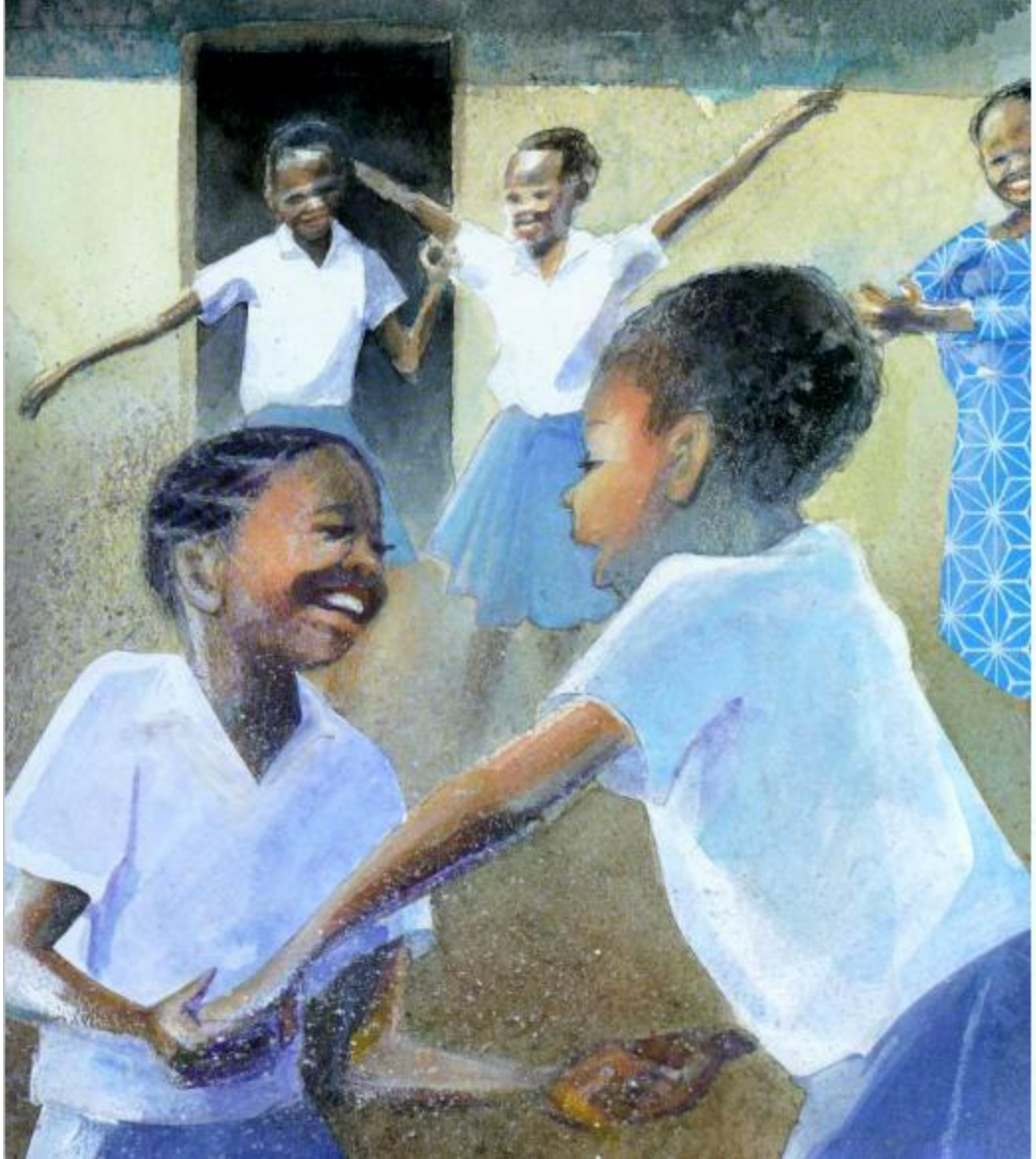

क्लास में टीचर ने एलिज़ाबेथ और अन्य छोटे बच्चों को पाँच तक की गिनती सिखाई, "मोजा, मैबिली, टटू, नेने, टानो." कुछ समय के बाद, एलिज़ाबेथ खुद अपने आप, पांच तक की गिनती दोहरा पाई.

बाद में, टीचर ने बच्चों को एक कहानी पढ़कर सुनाई. उसके बाद स्कूल खत्म हुआ. एलिज़ाबेथ और उसके सहपाठी स्कूल के बगीचे में काम करने के लिए कुछ देर रुके. एलिजाबेथ ने प्याज, टमाटर तोड़ने में उनकी मदद की.

घर वापिस जाते समय एलिज़ाबेथ के नए जूते उसके पैरों को काटने लगे. इसलिए उसने अपने जूते उतार दिए. अब उसके पैरों के तलुए गर्म मिट्टी को छू रहे थे जो उसे बहुत अच्छा लगा.

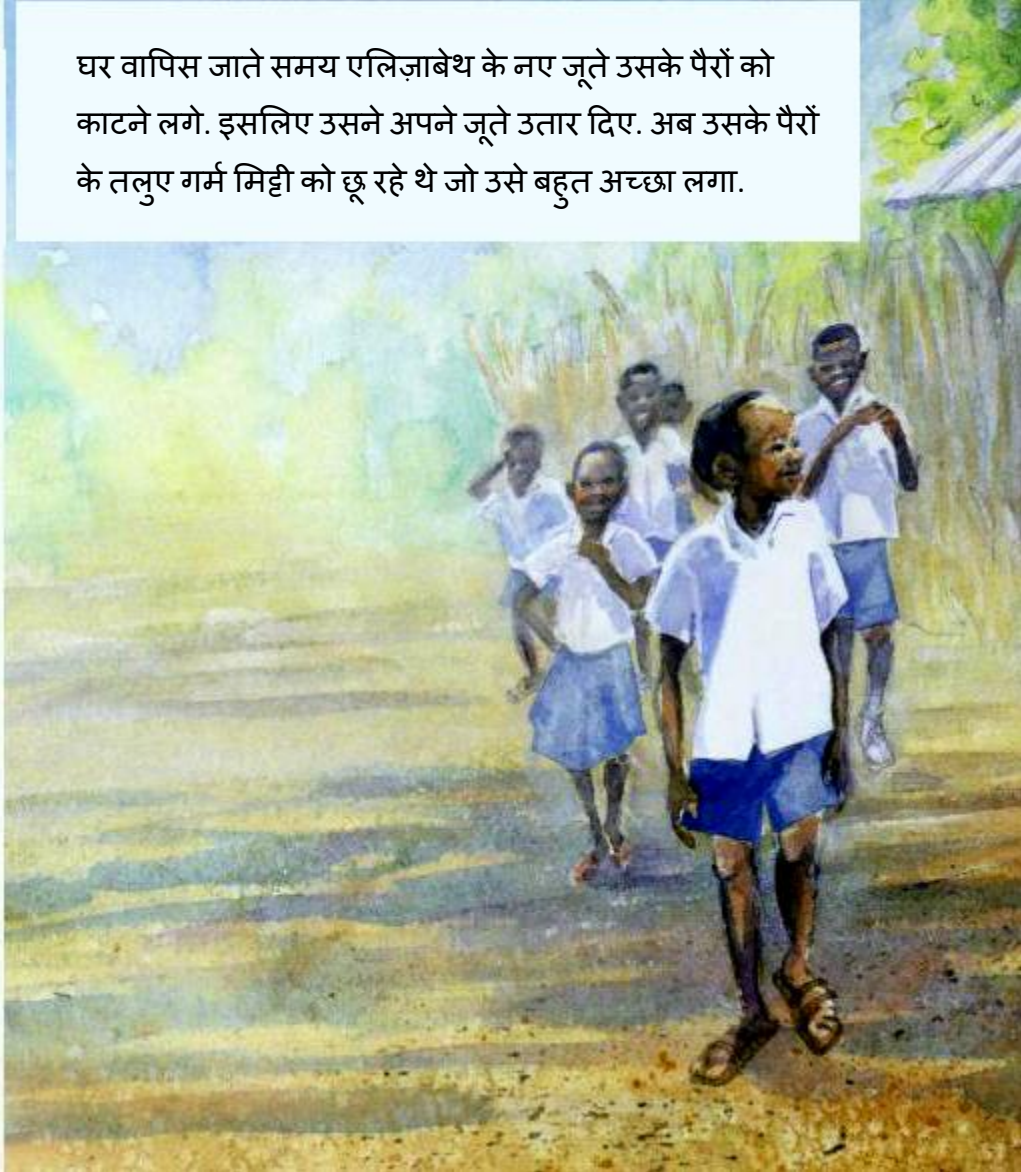

घर पर एलिज़ाबेथ सभी
को देखकर बहुत खुश हुई.
उसने सभी को गले लगाया.

उसने स्कूल की यूनिफार्म उतारकर अपने पुराने कपड़े पहने, जिन्हें मामा ने धोकर सुखाया था. धुले कपड़े सूरज से गर्म थे और कठोर नई स्कूली यूनिफार्म की तुलना में शरीर पर बहुत नरम महसूस हो रहे थे.

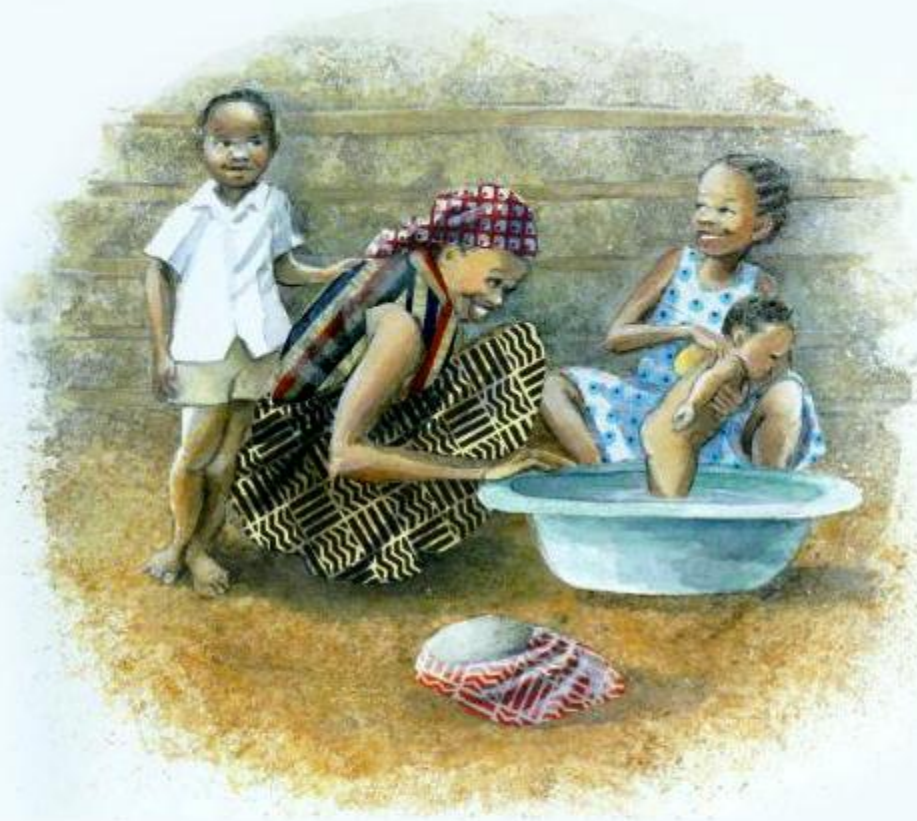

एलिज़ाबेथ ने दोपहर के बाकी कामों में मदद की. वो ईवा और ओबेदी के साथ खेली और उसने फ्लोरा को नहलाने में मां की मदद की. एलिज़ाबेथ घर आकर बहुत खुश थी, उसने फैसला किया कि अब वो स्कूल वापस नहीं जाएगी.

एलिजाबेथ अपनी बिल्ली को खोजने गई. उसने लगभग हर जगह मोशी को खोजा. तभी मामा ने एलिजाबेथ को बुलाया. एलिजाबेथ घर में भाग कर गई. मामा, बिस्तर के पास मुस्कुराते हुए अपने घुटनों पर बैठी थीं, और ओबेदी उनकी बगल में ऊपर-नीचे कूद रहा था.

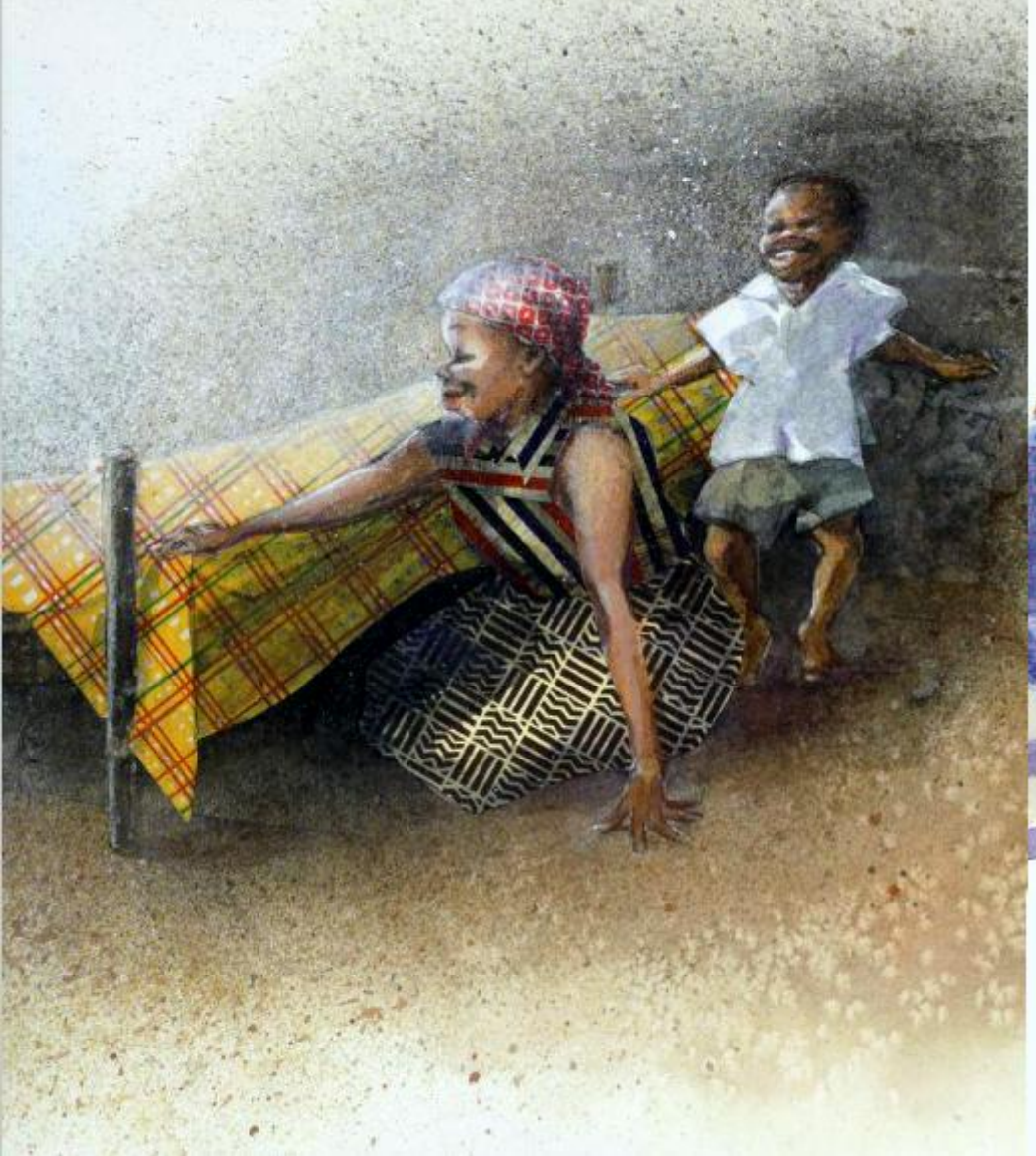

एलिजाबेथ ने बिस्तर के नीचे झांककर देखा. मोशी नीचे आराम से सोई थी, लेकिन अब वो अकेली नहीं थी. उसकी बगल में कई छोटे नवजात बिल्ली के बच्चे भी थे.

एलिज़ाबेथ उन्हें परेशान नहीं करना चाहती थी, लेकिन तभी उसने कुछ सोचा. उसने हरेक बिल्ली के बच्चे की ओर इशारा किया और उन्हें गिना, "मोजा, मैबिली, टटू, नेने, टानो." यह सुनकर मामा हैरान रह गईं, और उन्होंने एलिजाबेथ को अपने गले लगाया. एलिजाबेथ को अब गिनना आता था!

उस रात एलिज़ाबेथ ने बाबा के लिए भी बिल्ली के बच्चों की गिनती की और स्कूल में जो कुछ सीखा था उसे दिखाने के लिए उसने मिट्टी में कुछ अक्षर लिखे. यह देखकर मामा और बाबा बहुत खुश हुए.

पेन्डो और एलिजाबेथ ने एक-साथ नृत्य किया. जब ओबेदी ने उनकी नक़ल करने की कोशिश की तो सभी लोग उसे देखकर हंस पड़े.

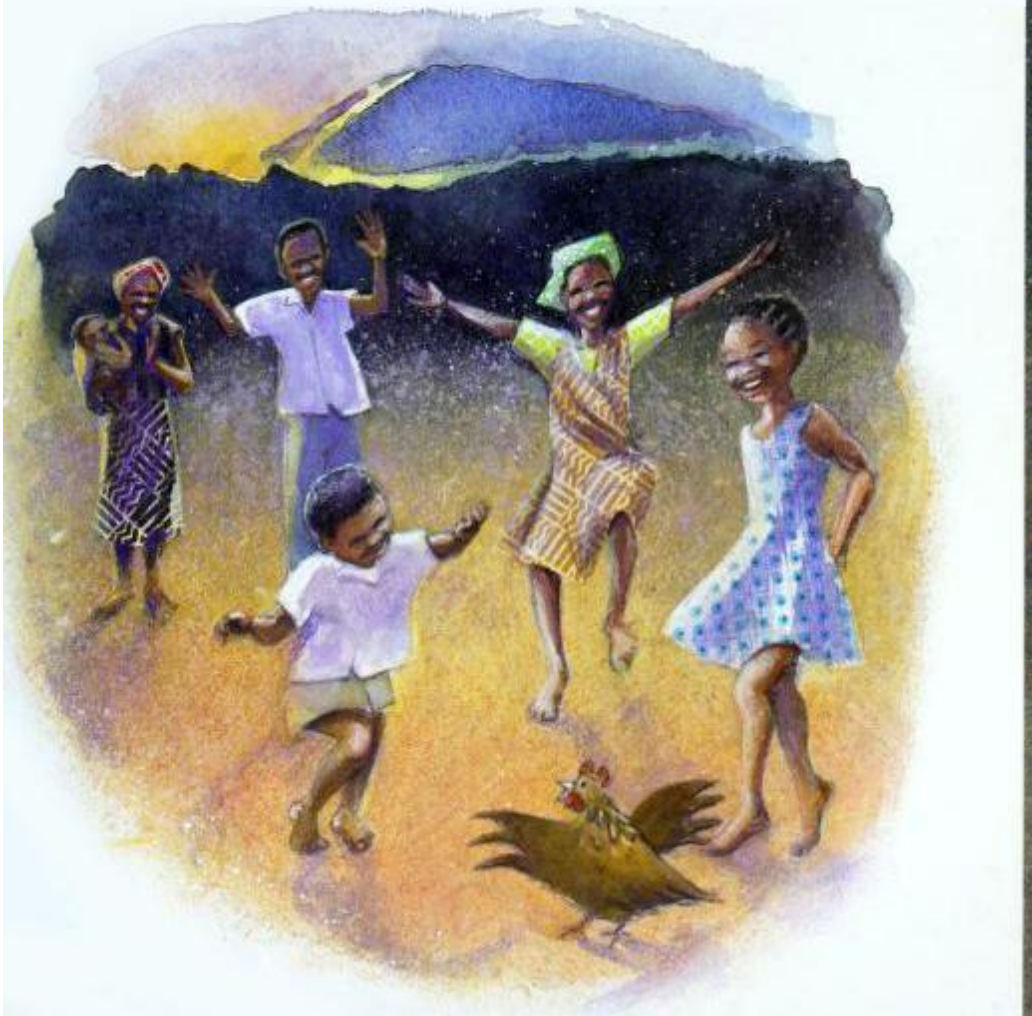

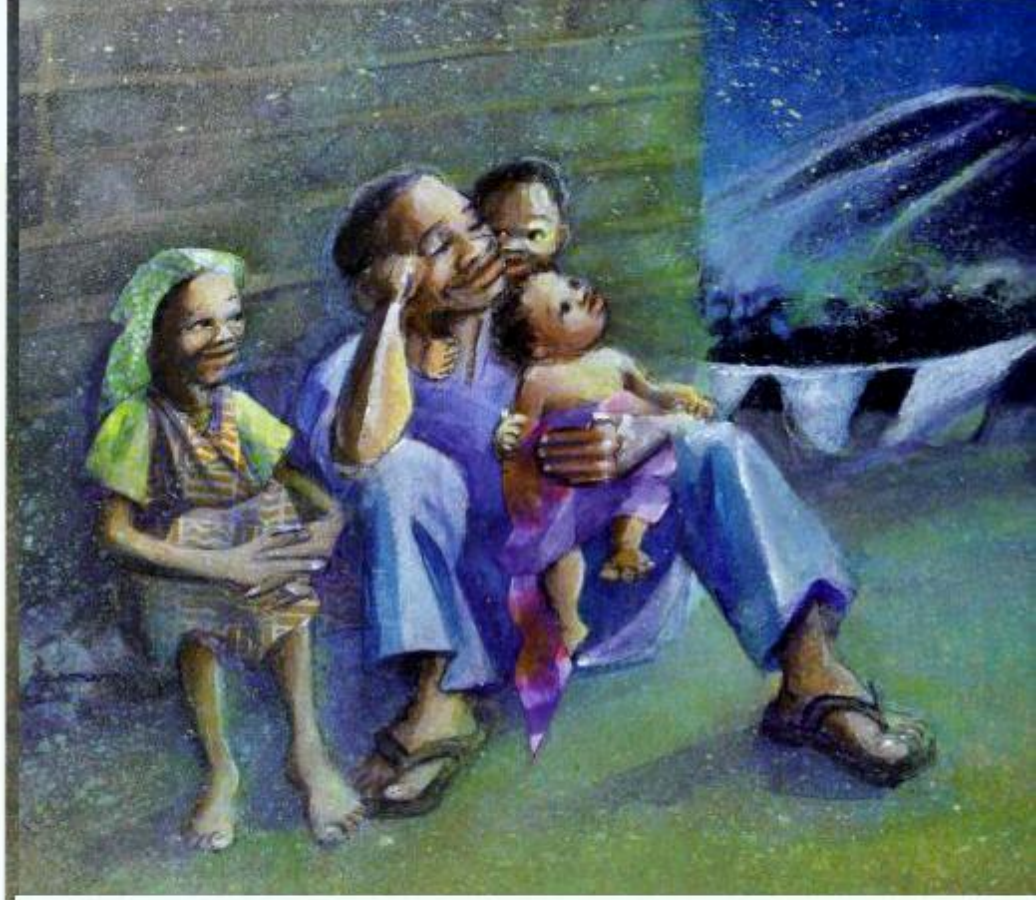

एलिजाबेथ ने मामा को “मचौरा” खेल, खेलना दिखाया. लेकिन मामा पहले से ही “मचौरा” की एक अच्छी खिलाड़ी थीं. यह देख एलिजाबेथ को काफी आश्चर्य हुआ. फिर वे सोने के समय तक “मचौरा” खेलते रहे.

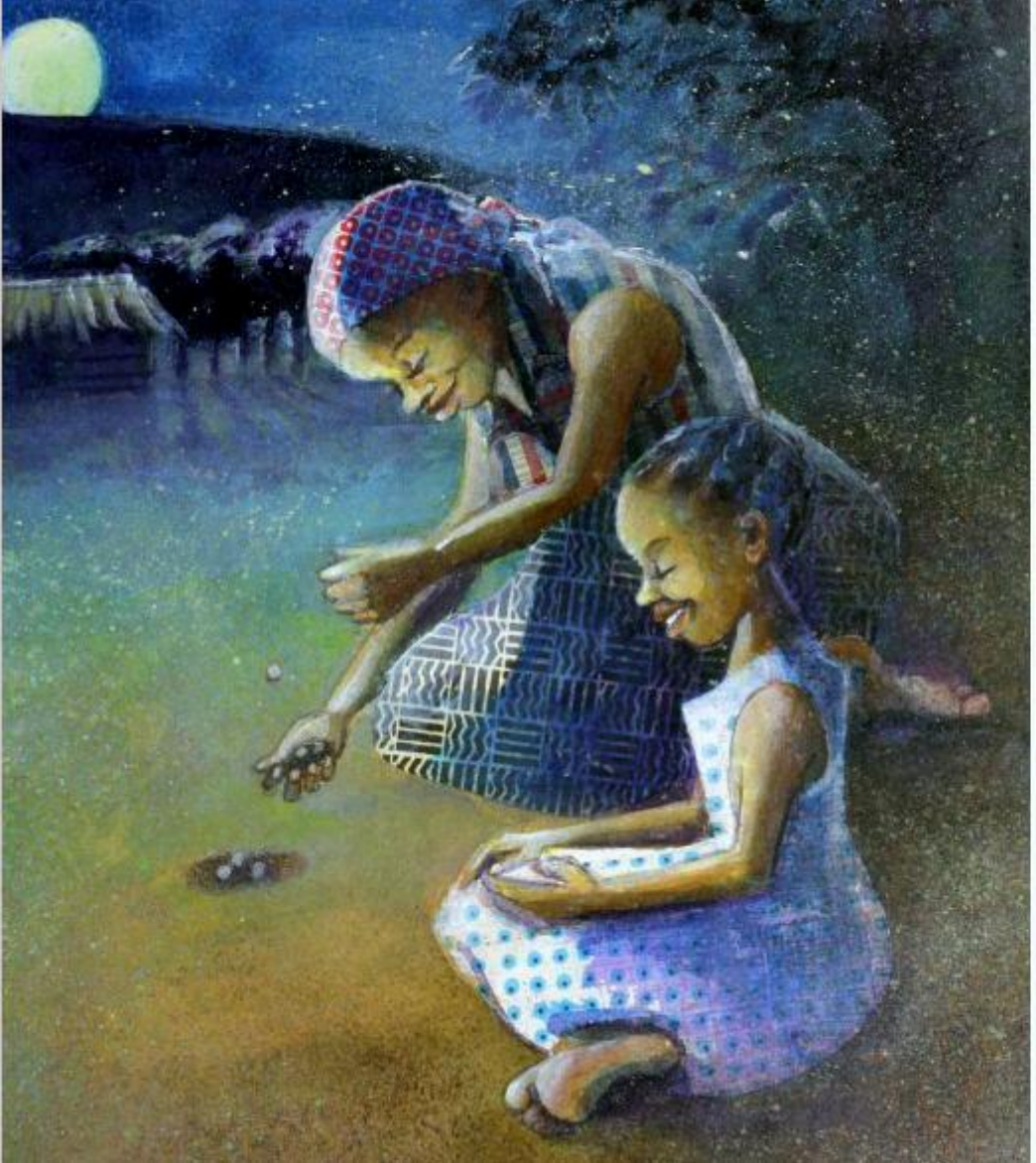

अंत में एलिजाबेथ बिस्तर में जाकर लेटी और उसने ईवा को कसकर अपने गले लगाया. उसने अपने सुंदर स्कूल के कपड़े दरवाजे पर कील से बड़े करीने से लटकते हुए देखे. एलिजाबेथ ने स्कूल में आज जो नई चीजें सीखी थीं उन्हें मामा और बाबा को दिखाने में उसे बहुत मज़ा आया.

फिर एलिज़ाबेथ ने अपनी आँखें बंद कर लीं. उसे कुछ-कुछ देर बाद मोशी की हल्की आवाज़ सुनाई देती रही. एलिज़ाबेथ ने फैसला किया कि वो स्कूल को एक और मौका देगी. लेकिन उसके लिए घर निश्चित रूप से, सबसे अच्छी जगह थी.

अंत